Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 17, Issue No. 1, April-2020, ISSN 2230-7540

माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापकों की अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति

Arpana Kumari[1]* Dr. Nidhi Agarwal[2]

[1] Research Scholar, Kalinga University, Raipur

[2] PhD Supervisor, Kalinga University, Raipur

सार – ***शिक्षा के स्वरूप में माध्यमिक शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। माध्यमिक शिक्षा समूची शिक्षा प्रणाली की रीढ की हड्डी के समान है। माध्यमिक शिक्षा राष्ट्र के तकनीकी तथा सांस्कृतिक जीवन पर विशेष प्रभाव डालती है। यह शिक्षा उन नवयुवकों को शिक्षित करती है जो देश के समाजिक निर्माण तथा आर्थिक विकास में प्रभावशाली हो सके। ऐसी स्थिति में माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की भूमिका के निर्वाह की अनिवार्यता स्वतः ही सुस्पष्ट हो जाती है। अध्यापकों की भूमिका निर्वाह प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से उनके अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति पर निर्भर करता है। प्रस्तुत शोधपत्र "देहरादून जिले के माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति का एक अध्ययन," प्राथमिक आंकड़ों पर आधारित है, जिसमें सर्वेक्षण विधि द्वारा डॉ. एस. पी. आहलूवालिया द्वारा निर्मित शिक्षक अभिवृत्ति परिसूची (टी.ए.आई.) प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। शोध में माध्यमिक स्तर के अन्तर्गत सरकारी व निजी विद्यालयों के 100 शिक्षकों को प्रतिदर्श के रूप में लिया गया है। प्रस्तुत शोधपत्र देहरादून जिले के माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति का एक तुलनात्मक अध्ययन एवं इसमें वांछनीय सुधारात्मक उपायों पर विचार करने का एक प्रयास है।***

कुंजीशब्द – ***माध्यमिक शिक्षा, अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति***

---------------------------------x---------------------------------

प्रस्तावना

शिक्षा वह माध्यम है जो मानव को पशुतुल्य से मनुष्य बनाती है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य पहने जाने वाले परिधान के साथ-साथ अपने उठने-बैठने, चलने-फिरने ओर सामाजिक रीति-रिवाजों को सीखता है। शिक्षा प्राप्ति के उपरांत ही मानव के सभ्य एवं सुसंस्कृत जीवन की कल्पना की जा सकती है। शिक्षा का महत्व प्राचीन काल से ही चला आ रहा है। अपनी मृत्यु से पूर्व गोतम बुद्ध ने अपने प्रिय शिष्य आनंद से कहा था-'आत्दीपो भव' यानी अपने आप में प्रकाशवान बनों, जो शिक्षा के द्वारा ही संभव है। शिक्षा ही मानव जीवन को सार्थक बनाती है। शिक्षा जहां एक ओर बालकों का सर्वांगीण विकास करती है, उन्हें चरित्रवान, बुद्धिमान बनाती है, वहीं दूसरी ओर यह समाज के विकास हेतु एक अनिवार्य एवं शक्तिशाली साधन है। बालक की व्यक्तिगत प्रगति, उसका मानसिक, शारीरिक तथा भावनात्मक विकास शिक्षा के माध्यम से ही प्राप्त किये जा सकते हैं।

शिक्षा हमारे जीवन के रखरखाव, जिम्मेदार नागरिकता के लिए एवं आज की जटिल दुनिया में सफल प्रवेश के लिए बुनियादी आवश्यकता है। शिक्षा द्वारा ही व्यक्ति अज्ञात ज्ञान को ज्ञात कर सकता है। इस व्यवस्था को अर्गसर करने में शिक्षकगण मुख्य भूमिका निभाते आ रहे हैं। शिक्षक की गुणवत्ता का सम्बन्ध अकादमिक एवं व्यावसायिक गुणवत्ता से जुड़ा है। भारत सरकार ने उपयोगी एवं गुणवत्तापरक शिक्षा देने के लिये विभिन्न प्रशासनिक अभिकरणों की स्थापना की जैसे-शिक्षा का केंद्रीय परामर्शदात्री मण्डल, अखिल भारतीय माध्यमिक प्रारंभिक शिक्षा परिषद, अखिल भारतीय माध्यमिक शिक्षा परिषद, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, वैज्ञानिक एवं ओद्योगिक अनुसंधान परिषद एवं राष्ट्रीय शिक्षक-शिक्षा परिषद

भारतीय संस्कृति का एक सूत्र वाक्य है 'तमसो मा ज्योतिर्गमय।' अंधेरे से उजाले की ओर ले जाने की इस प्रक्रिया में शिक्षा का बहुत बड़ा योगदान है। भारतीय परंपरा में शिक्षा को शरीर, मन ओर आत्मा के विकास द्वारा मुक्ति का

www.ignited.in

साधन माना गया है। शिक्षा मानव को उस सोपान पर ले जाती है जहां वह अपने समर्ग व्यक्तित्व का विकास कर सकता है। भारत में गुरू शिष्य की लम्बी परंपरा रही है

शक्षा की प्रक्रिया में शिक्षक की अहम भूमिका होती है। बालक जो इस प्रक्रिया का महत्वपूर्ण अंग है वह भी स्वयं को शिक्षक के व्यक्तित्व के साथ अंगीकृत करना चाहता है। प्रत्येक शिक्षक का अपना एक निजी दर्शन होता है। शिक्षक द्वारा किया गया कार्य उसके आदर्शों, उद्देश्यों, मूल्यों एवं धारणाओं को परिलक्षित करता है ओर उसका प्रभाव छात्रों पर भी डालता है। इसी कारण प्रगतिशील एवं उभरते हुए भारतीय समाज में शिक्षक का महत्वपूर्ण स्थान हैं।

प्रबन्ध मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में व्याप्त है। प्रबन्ध घर परिवार से शुरू होकर सरकार तक व्याप्त है। सेना, पुलिस, स्वयंसेवी संस्था, दुकान या अन्य कोई व्यवस्था, विद्यालय, महाविद्यालय सभी जगह प्रबन्ध है।

अभिवृत्ति किसी व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक घटक है। व्यक्ति की अभिवृत्ति समय एवं परिस्थितियों के अनुरूप बदलती रहती है। यह आज किसी व्यक्ति, घटना अथवा वस्तु के अनुकूल है तो कल प्रतिकूल भी हो सकती है। अभिवृत्ति भावनाओं, विचारों एवं मूल्यांकनात्मक दृष्टिकोण की अभिवृत्ति है। यह अभिव्यक्ति किसी के प्रति आपकी भावनाओं को प्रकट करती है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की बुद्धिमता का तुलनात्मक अध्ययन।

2. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की बुद्धिमता एवं कार्य संतुष्टि के मध्य सह-संबंध ज्ञात करनां

शिक्षण के कार्य

शिक्षण किस प्रकार दिया जाये, इसके लिये शिक्षक को प्रशिक्षण मिलना आवश्यक हे। उसे अपने कार्य-संबंधी कला, तकनीक तथा सूचना मिलनी चाहिये। शिक्षक के लिये जिन महत्वपूर्ण कलाओं को सीखने की आवश्यकता हे ओर जिन विशेषताओं का उद्‌विकास उसमें अनिवार्य हे। शिक्षक के लिये जिन वृत्तिक कला एवं ज्ञान की आवश्यकता हे, उसको शोधार्थी ने चार विस्तृत क्षेत्रों में विभाजित किया हे, प्रत्येक क्षेत्र में उसे उच्च स्तर की योग्यता प्राप्त करने की आवश्यकता हे, जो कि निम्न प्रकार से हें

शिक्षकों को उन बालकों के संबंध में जानकारी होनी चाहिये जिनके साथ वह कार्य करें

उसको बालक ओर बालिकाओं की प्रकृति एवं आवश्यकताओं की गहरी जानकारी होनी चाहिये। उसको उन खण्डों का पता होना चाहिये जो उनकी अभिवृत्तियों, रूचियों, व्यक्तित्व, बौद्विक योग्यता तथा शारीरिक वृद्वि पर नियंत्रण रखते हे। उसको समझ लेना चाहिये कि वह क्या सीखते हे? तथा उसके सीखने में कोन-सी शक्तियों का वह प्रयोग कर सकता हे।

शिक्षक को निदान की कला आनी चाहिये

शिक्षक को इस बात की योग्यता होनी चाहिये कि वह निर्धारित कर सके कि विभिन्न क्षेत्रों में प्रत्येक बालक का विकास किस स्तर पर हे। उसमें बालक की योग्यताओं ओर शैक्षिक उपार्जन इत्यादि के स्तर को निदान करने की योग्यता होनी चाहिये।

शिक्षा में गुणवत्ता

शिक्षा में गुणवत्ता का निर्धारण सुप्रशिक्षित अध्यापकों की उपलब्धता अध्यापक छात्र का उचित अनुपात, महाविद्यालय में उपलब्ध आधुनिक शेक्षणिक उपकरण तथा आवश्यक कक्षा कक्ष सुविधाओं से किया जाता है।

किसी महाविद्यालय की शैक्षणिक गुणवत्ता वृद्धि हेतु आवश्यक है कि अध्यापक बहुशिक्षित एवं छात्रों को अभिप्रेरित करने की क्षमता रखते हो, शिक्षकों में शिक्षा के बारे में पढ ़ने की रूचि, छात्रों (छात्राध्यपक) के प्रति प्रेम भावना, तथा बहुआयामी व्यक्तित्व के गुण होने चाहिए। शिक्षक (अध्यापक शिक्षक) को सदैव महान व्यक्तित्व वाले शिक्षकों से प्रेरित होकर स्वयं में भी उनके गुणों का समावेश करते रहने चाहिए क्योंकि "स्वयं में गुणवत्ता ही अन्ततः शिक्षा में गुणवत्ता की प्रेरक होती हे।" ऐसे शिक्षकों की सभी शेक्षिक संस्थाओं को आवश्यकता हे। "कक्षाकक्ष एवं उससे बाहर क्या चल रहा हे गुणवत्ता इससे प्रभावित होती हे।"

शिक्षकों की भूमिका

शिक्षक का कार्य मात्र शिक्षण कार्य की समाप्ति पर ही पूर्ण नहीं हो जाता। छात्रों को उचित निर्देशन प्रदान करना, विद्यार्थियों की भावनाओं को समझना, विद्यालय में एक सामाजिक वातावरण का निर्माण करना, विभिन्न पाठ्‌य सहगामी क्रियाओं का संचालन करना भी अध्यापक के

महत्वपूर्ण कार्य हैं। अध्यापक के कर्तव्य ओर भूमिका को इस प्रकार से समझा जा सकता हैं।

शिक्षण के दौरान भूमिका

एक आदर्श शिक्षक को कक्षा में प्रवेश करने से पूर्व नियमित रूप से पाठ योजनाओं का निर्माण किया जाना चाहिये। पाठ योजना निर्धारित किये बिना शिक्षण कार्य कदापि नहीं किया जाना चाहिये, क्योंकि इससे विद्यार्थियों के साथ अन्याय हो सकता है। एक शिक्षक को पूरी कक्षा का प्रतिनिधित्व करते हुए शिक्षण कार्य करना चाहिये ना कि समयाभाव आदि का बहाना बनाकर केवल प्रतिभाशाली बच्चों का। शिक्षक को प्रतिभाशाली, ओसत एवं मन्दबुद्धि बालकों का आकलन करना चाहिये एवं विशेष रूप से आवश्यकतानुसार उन पर ध्यान देना चाहिये। नियमित रूप से उनको कार्य देना चाहिये एवं उनको व्यवहारिक ज्ञान जो उनके जीवन के लिये अुनपयोगी हे देना चाहिये।

कुशल प्रबंधक के रूप में भूमिका

विद्यार्थियों को विषय की उचित शिक्षा प्रदान करने हेतु शिक्षकों को उपलब्ध साधनों का कुशलतम उपयोग करना होता हे। अतः कहा जा सकता हे की शिक्षक एक प्रंबधक की भी भूमिका का निर्वाह करता हैं।

एक मनोवैज्ञानिक के रूप में भूमिका

किसी भी विषय के शिक्षक के सम्मुख कक्षा में सबसे महत्वपूर्ण चुनौती यह होती हे कि एक कक्षा में सभी छात्र एक समान नहीं होते हे उनकी मानसिक योग्यता व रूचि भिन्न होती हे। प्रायः छात्रों के व्यक्तित्व को निम्न आधारों पर विभक्त किया जा सकता हैं।

1. ज्ञान के आधार पर
2. योग्यता के आधार पर
3. बुद्धि के आधार पर
4. क्षमता के आधार पर
5. रूचि के आधार पर
6. सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के आधार पर

बुद्विमत्ता की अवधारणा

छात्रों के निरीक्षण तथा परीक्षाओं द्वारा कोन छात्र बुद्विमान हे ओर कोन नहीं, इसका पता तो शिक्षक आसानी से लगा लेते हे। व्यक्ति की सामान्य बुद्वि में अन्य व्यक्तियों से काफी अंतर देखने को मिलता हे। बुद्वि के आधार पर व्यक्तिगत भिन्नतायें स्थापित होती हे। कुछ छात्र मंद बुद्वि होते हें ओर कुछ तीव्र बुद्वि होते हें। लेकिन जो छात्र बुद्विमान हे उसकी पाठशाला में अच्छी प्रगति नहीं देखने को मिलती हे। सामान्य विद्यार्थी भी उससे आगे निकल जाता हे। बुद्विमान ओर ज्ञानी होना इन दोनों संज्ञाओं में विशेष अंतर हे। जैसे बुद्वि निसर्गदत्त हे ओर ज्ञान स्वयं प्राप्त का संपादित किया जाता हे। अधिक ज्ञान संपादित करता हे परंतु यह हर बार उचित नहीं हे।

बुद्वि को जानने के लिए उसने संपादित किए ज्ञान का ही विचार किया जाता हे। उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता हे कि ज्ञान का संपादन तथा बुद्वि का घनिष्ट संबंध हे। परंतु बुद्विमत्ता यह ज्ञान से बिलकुल अलग हे। बुद्वि की अवधारणा स्पष्ट करने के लिए मनोवैज्ञानिको ने प्रयास किए हे।

शैक्षिक प्रबन्धन के अभिकरण

किसी भी देश के शेक्षिक प्रबन्धन के लिए मुख्य रूप से चार अभिकरण होते हैं:-

1. **स्वैच्छिक संस्थाएं:-** स्वैच्छिक संस्थाएं वे संस्थाएं हैं, जो समाज की सेवा के उद्देश्य से गठित की जाती है। यह संस्थाएं अन्य सामाजिक कार्यों के साथ शिक्षा प्रसार के कार्यो में रूचि लेती हैं तथा इसके लिए अपने साधनों एवं कार्य क्षेत्र को दृष्टि में रखते हुए विभिन्न स्तरों की शिक्षण संस्थाओं की स्थापना करती है, कुछ संस्थाएं निजी क्षेत्रों की भी होती है जो विशेष जाति या व्यक्ति द्वारा स्थपित की जाती है। किसी भी देश की शेक्षिक उन्नति में इन संस्थाओं का बडा योग रहता है। जो संस्थाएं आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होती हैं, वे आर्थिक दृष्टि से कमजोर छात्रों के लिए निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था तो करती ही हैं पर साथ ही निःशुल्क पुस्तकें, दोपहर का भोजन तथा छात्रवृत्तियों की भी व्यवस्था करती है। इस प्रकार स्वोच्छिक संस्थाएं शिक्षा के विकास में उल्लेखनीय योगदान देती है, लेकिन कुछ निजी संस्थाएं ऐसी होती हैं जो शिक्षा

को व्यवसाय के रूप में लेकर विद्यार्थियों एवं शिक्षकों का शोषण करती है परन्तु यह बात सही है कि शिक्षा के विकास में प्रत्येक स्तर पर यह स्वैच्छिक संस्थाएं सक्रिय भूमिका निभाती हैं।

2. **स्थानीय निकाय:-** स्वैच्छिक संस्थाओं के अतिरिक्त जो दूसरा महत्वपूर्ण अभिकरण है, वह है, स्थानीय निकाय अर्थात् नगर परिषद, नगर निगम, पंचायतें इत्यादि। इन स्थानीय निकायों का शिक्षा व्यवस्था में उल्लेखनीय योगदान रहता है, जहां शैक्षिक प्रशासन लोकतांत्रिक होता है वहां केन्द्र अपनी शक्तियाँ एवं दायित्व राज्यों को सौंप देते हैं तथा राज्य यह अधिकार नगर निगमों एवं पंचायत समितियों से चुनकर आए जन प्रतिनिधियों को दे देते हैं। यदि यह प्रतिनिधि शिक्षा के महत्व को नहीं समझते हैं या शैक्षिक उन्नति में गम्भीर नहीं होते हैं तो इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है जो निकाय अपने दायित्व को समझते हैं, वह शिक्षा की व्यवस्था हेतु समुचित प्रयास करते हैं।

शैक्षिक प्रबंधन के प्रकार

1. **प्राधिकारवादी प्रबंधन:-** प्राधिकारवादी प्रबंधन वह शैक्षिक प्रबंधन है, जिसमें समस्त उत्तरदायित्व शीर्षस्थ स्थिति में निहित होते हैं। वह अपने अधिकारों एवं उत्तरदायित्वों को अपने अधीनस्थ अधिकारियों को पदानुक्रम के अनुसार वितरित करता है। इसमें स्थानीय ओर तत्कालीन आवश्यकताओं की उपेक्षा की जाती है, इस प्रकार के प्रबंधन में प्रबंधन प्रक्रिया उच्च स्तर से निम्न स्तर की ओर होती है, प्राधिकारवादी प्रबंधन कठोर होता है, जिस कारण इसमें सुधार की कम संभावना होती है।

2. **लोकतांत्रिक प्रबंधन:-** प्रजातांत्रिक प्रबंधन गतिशील एवं लचीला प्रबंधन है, जिससे इसमें सुधार एवं अभिवृद्धि की संभावना अधिक रहती है। लोकतांत्रिक प्रबंधन में व्यक्ति के व्यक्तित्व का सम्मान किया जाता है। उसको अपने उत्तरदायित्व को पूरा करने का पूर्ण अवसर दिया जाता है। इसमें नीतियों के क्रियान्विति हेतु सभी अधिकारियों में समन्वय होना आवश्यक है। इसमें प्रत्येक व्यक्ति निष्पक्ष विचार प्रकट करने के लिए स्वतंत्र होता है। सभी को स्वोन्नति के समान अवसर दिये जाते हैं।

विद्यालयीन शिक्षकों का बुद्धिमत्ता स्तर

बुद्धि की अवधारणा की उत्पत्ति पुरातनता में निहित हे, विभिन्न दृष्टिकोणों में परिभाषाओं या विशेषताओं ओर अवधारणाओं में लोगों से पूछा गया हे कि वे क्या चाहते हे? बुद्धिजीवी लोग इसे बुद्धिमत्ता कहते हे। प्रस्तुत जानकारी से स्पष्ट हे कि जो प्रदर्शन करने वाले लोगों से एकत्रित डेटा पर आधारित या कम से कम परीक्षण किया जाता हे, बुद्धिमान कामकाज को मापने के लिये माना जाता हे ओर इस आधार के रूप में कार्य करता हे।

स्पीरमन (1927) ने सबसे शुरूआती कारक सिद्धांत दिया, जिसमें दो प्रकार के कारक सामान्य कारक ओर विशिष्ट कारक शामिल हे। थुरस्टोन (1938) ने स्पीरमैन के सिद्धांत को स्वीकार किया ओर प्राथमिक पहचान की मानसिक शक्तियों की विवेचना की हे। गुडलफोर्ड (1967) ने बौद्ध मॉडल की अपनी संरचना में प्रस्तावित किया, उसमें 120 प्राथमिक क्षमताओं वालो को शामिल किया हे जिनमें से प्रत्येक ने कुछ उत्पाद उत्पन्न करने के लिये कुछ सामग्री पर ओर कुछ ऑपरेशन की कारवाई की हे। स्टर्नबर्ग (1985) के इंटेलिजेंस के त्रैमासिक सिद्धांत के तहत बुद्धिमान व्यवहार विश्लेषणात्मक, रचनात्मक ओर व्यवहारिक क्षमताओं का उत्पाद हे। गार्डनर (1983-1993) के सिद्धांतकारों के बीच प्रमुख रहा हे जो की मानव संज्ञानात्मक बहस रही हे। बुद्धिमानी के कई स्वतंत्र रूपों के रूप में सबसे अच्छी तरह से कल्पना की जाती रही हे।[8]

21 वीं शताब्दी में शिक्षक की भूमिका

स्कूल ओर डी स्कूली शिक्षा की वकालत करने की सीमा तक चले गए हें ओर उन्होनें शिक्षा में एक कट्टरपंथी परिवर्तन की वकालत की हे। नतीजतन, शिक्षक की भूमिका होगी बहुत सारे बदलाव से गुजरने की, क्योंकि भारतीय समाज तेजी से बदल रहा हे। कई प्रक्रियाओं, प्रकृति ओर हमारे काम को आधुनिक बनाने ओर बदलने के लिए परिवर्तन चल रहे हें। संस्थानों, शिक्षाविदों ओर सामाजिक योजनाकार अब आकार के आधार पर गंभीरता से सोच रहे हें। भारत में भविष्य का समाज अलग होगा वर्तमान कई मामलों में शिक्षकों की भूमिका को आकार मिलेगा, स्कूल की बदलती मांगो को महत्व मिलेगा।

शैक्षिक प्रबंधन को प्रभावित करने वाले कारक

शिक्षा प्रबंधन का विकास किसी निश्चित काल अथवा परिस्थिति में न होकर क्रमिक होता है। किसी भी वस्तु या

प्रक्रिया का विकास तब तक संभव नहीं जब तक उससे सम्बन्धित मूल तत्व उसको प्रभावित न करे। शिक्षा प्रबंधन के विकास को प्रभावित करने वाले उसके मूल तत्व हैं। शिक्षा प्रबंधन पर अनेक तत्व अपना प्रभाव डालते हैं, कुछ तत्व जो शिक्षा प्रबंधन पर सीधा प्रभाव डालते हैं तथा यही प्रबंधन की प्रकृति को निर्धारित करते हैं।

प्रबंधन से सम्बन्धित ऐतिहासिक कारक

- किसी भी देश का वर्तमान शिक्षा प्रबंधन, अतीत की पृष्ठभूमि ओर भविष्य की छाया में विकसित होता है।
- किसी भी देश का इतिहास अथवा ऐतिहासिक घटनाएं वहां की शिक्षा प्रणाली और शेक्षिक प्रबंधन पर अपना प्रभाव डाला करती है।
- ऐतिहासिक दृष्टि से देश की दार्शनिक विचारधारा, जो प्राचीन काल से चली आ रही है, उस देश के शिक्षा प्रबंधन की आधारशिला बनाती है।
- प्रत्येक देश जिनका अपना प्राचीन इतिहास स्पष्ट है, अपने शैक्षिक प्रबंधन को कोई नया रूप न देकर उसका ऐतिहासिक दृष्टि से नवीनीकरण करता है।

सामाजिक कारक

- समाज का विकास क्रमिक रूप में होता है ओर इस क्रमिक विकास का प्रभाव शिक्षा प्रबंधन पर भी पड़ता है।
- सामाजिक परिवर्तन फेलस्वरूप शिक्षा में परिवर्तन होना आवश्यक है। अतः शिक्षा प्रबंधन पर इन परिवर्तनों का प्रभाव पड़ता हे।
- शिक्षा ओर समाज का घनिष्ठ सम्बन्ध है, अतः दोनों की गतिविधियों ओर प्रणालियों में समायोजन होना आवश्यक है।

राजनीतिक कारक

- प्रत्येक देश की राजनीतिक व्यवस्था उस देश की शेक्षिक विचारधारा को प्रभावित करती है, जिससे शिक्षा-प्रबंधन भी प्रभावित होता है।
- राजनीतिक सम्बन्ध, राजनीतिक घटनाएँ, राजनीतिक आदर्शों तथा राजनीतिक प्रभाव शिक्षा ओर शेक्षिक प्रबंधन को प्रभावित करते रहते हैं।
- देश की राजनीति से भी शिक्षा प्रशासन प्रभावित होता है। कभी-कभी तो यहाँ तक पाया जाता है कि शिक्षा प्रबंधन राजनीतिक उद्देश्यों की पूर्ति में तत्पर रहता है।

शैक्षणिक अभिवृत्ति

शिक्षण अभिवृत्ति न केवल कक्षा में उनके व्यवहार को प्रभावित करती है बल्कि यह छात्रों के व्यवहार को भी प्रभावित करती है। यदि शिक्षक अपने व्यवसाय के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति रखते हे, केवल तभी वह विद्यार्थियों को प्रभावी ओर उत्पादक अधिगम प्रदान कर सकते हैं। शिक्षकों का उपयुक्त चुनाव के द्वारा ही शिक्षा के मात्रात्मक विस्तार ओर गुणात्मक सुधार की समस्या को उठाया जा सकता है। शिक्षकों में व्यवसाय के प्रति अनुकूल अभिवृत्ति पैदा करना एवं शिक्षण योग्यता में सुधार आवश्यक है। शिक्षा की सफलता प्रारूप, लक्ष्य एवं उद्देश्यों पर निर्भर नहीं करतीं, बल्कि शिक्षकों की शैक्षणिक एवं व्यावसायिक तैयारी पर निर्भर करती है। व्यावसायिक तैयारी हेतु शिक्षकों को उनके द्वारा अभिवृत्ति का अध्ययन बहुत महत्वपूर्ण है। एक शिक्षक अपने कर्तव्यों को एक व्यवसाय की तरह अपनी अभिवृत्ति, मूल्यों एवं विश्वास पर निर्भर रहकर ही कर सकता है। एक सकारात्मक अभिवृत्ति शिक्षक का कार्य न केवल आसान बनाती है बल्कि अधिक संतोषजनक एवं व्यावसायिक तोर पर पुरस्कृत करती है तथा नकारात्मक अभिवृत्ति शिक्षक के कार्य को कठिन, अधिक जटिल एवं अप्रिय बना देती है। सफल शिक्षकों की वांछनीय व्यावसायिक अभिवृत्ति होती है अर्थात् वे विषय जिसमें विशेषज्ञ हें के प्रति कठिन कार्य एवं जिम्मेदारी के प्रति धनात्मक अभिवृत्ति रखते हैं।

उपसंहार

शिक्षा वह माध्यम है जो मानव को पशु-तुल्य से मनुष्य बनाती है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य पहने जाने वाले परिधान के साथ-साथ अपने उठने-बैठने, चलने-फिरने ओर सामाजिक रीति रिवाजों को सीखता है। शिक्षा प्राप्ति के उपरांत ही मानव के सभ्य एवं सुसंस्कृत जीवन के कल्पना की जा सकती है। शिक्षा का महत्व प्राचीन काल से ही चला आ रहा है। अपनी मृत्यु से पूर्व गोतम बुद्ध ने अपने प्रिय शिष्य आनंद से कहा

था 'आत्दीपो भव' यानी अपने आप में प्रकाशवान बनों, जो शिक्षा के द्वारा ही संभव है। शिक्षा ही मानव जीवन को सार्थक बनाती है। शिक्षा जहां एक ओर बालकों का सर्वागीण विकास करती है, उन्हें चरित्रवान, बुद्धिमान बनाती है, वहीं दूसरी ओर यह समाज के विकास हेतु एक अनिवार्य एवं शक्तिशाली साधन है। बालक की व्यैक्तिगत प्रगति, उसका मानसिक, शारीरिक तथा भावनात्मक विकास शिक्षा के माध्यम से ही प्राप्त किये जा सकते हैं।

संदर्भ

1. मूले जार्ज (2013): 'दी साइंस आूफ एजू. रिसर्च' यूरेशिया पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।

2. भारत सरकार (2014-16): 'शिक्षा आयोग का प्रतिवेदन, शिक्षा एवं राष्ट्रीय विकास' शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली।

3. कार्टर, वी. गुड (2016): 'डिकशनरी आूफ एजूकेशन' थर्ड ए.डी., मैग्राहिल बुक कम्पनी, न्यूयॉर्क

4. मल्हौत्रा, आर.एन. (2016): 'इफेक्ट आूफ टीचर एजू. प्रोग्राम ऑनएटीट्यूड आूफ टीचर्स टुवडर्स द टीचिंग प्रोफेशन' बुच, एम.बी. सैकण्ड सर्वे आूफ रिसर्च इन एजूकेशन (1972-78) बड़ोदा।

5. सुखिया, एस.पी., मेहरोत्रा पी.वी., मेहरोत्रा आर.एन. (2016): 'एलीमैट्स आूफ एजेकेशनल रिसर्च' एलाइन प्रकाशन, न्यू देहली।

6. मेनन, वान एवं अन्य (2017): 'वेराइटी आूफ क्वालिटेटिव रिसर्च' सेज पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।

7. भारत सरकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986): 'कार्यक्रम कार्यान्वयन' मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय, नई दिल्ली।

8. अग्रवाल, बी.बी. (2000). आधुनिक भारतीय शिक्षा ओर उनकी समस्याएं, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर

9. दीवान, आऱ. (1993). विद्यालय के प्राचार्य के नेतृत्व व मूल्यनीति के सेकेण्ड्री स्कुलों के मध्य अध्ययन, पीएचडी (शिक्षा) जामिया मिलीया, इस्लामिया यूनिवर्सटी, पाकिस्तान।

10. पाण्डे, रामशकल (1997). शिक्षा का दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय पृष्ठ भूमि, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिरं

11. सक्सेना, स्वरूप (1996). शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, मेरठ, आरलाल बुक डिपों

12. त्रिपाठी,शालीग्राम (1996). शिक्षण व्यवहार, दरियागंज नई दिल्ली, राधा पब्लिकेशन्स

Corresponding Author

Arpana Kumari*

Research Scholar, Kalinga University, Raipur